समुदाय में सहिया की सक्रियता / वचनबद्धता

झारखण्ड में कार्यरत लगभग ४०००० सहिया की समुदय में किये जा रहे प्रयास को अपने इस कहानी में एक सहिया की कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहता हु ! सहिया को बिभिन्न नामो से भी जाना जाता है , कही इन्हें आशा , तो कही सहयोगनी के नाम से भी जाना जाता है ! सभी सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यो में इनकी भूमिका देखि जा रही है, और निःस्वार्थ भाव से अपने गावं के लिए निरंतर कार्य कर रही है !

मै सहिया के समुदाय में उनका योगदान को पिछले १० वर्षो से अनुभव कर रहा हु और मुझे ये अवसर अपने संस्था में मिला तो सोचा क्यों न में सहिया के ऊपर अपने कहानी को प्रस्तुत करू ।

इसी क्रम में , मै सहिया सरोज देवी के किये जा रहे सामुदायिक स्वास्थ्य प्रयास के साथ , अपने दैनिक जीवन को निभाते हुवे किस प्रकार से माँ और नवजात शिशु के स्वास्थ्य के साथ समुदाय में बदलाव ला रही है ।

सरोज देवी अपने पति सुनील कुजूर और एक पुत्र तथा एक पुत्री के साथ ग्राम छोटा कव्वाली ,पोस्ट – नामकुम पंचायत बरगावा थाना नामकुम जिला रांची में रहती है ! वह ८ वि क्लास तक पढ़ी है और २००६ से सहिया का काम कर रही है। उसके घर की आर्थिक स्थिती की बात करे तो छोटे से जमीन में खेती कर घर का भोजन कुछ महीनो तक चलता है । बेटा पेट्रोल पंप में काम करता है और बेटी स्नातक पार्ट १ करने के बाद आर्थिक तंगी से अपनी पढाई छोड़ दी है । सरोज रोज सुबह ५ बजे उठती है ,अपने दैनिक काम करने के बाद स्वय खाना बनाती है सभी को खाना देने के बाद १० बजे तक रोज अपने काम के लिए घर से निकल जाती है । इस क्रम में वो गर्ववती माता के ANC जाच हतु सुचना देना , नए गर्ववतीयो का पंजीकरण करना , AWW में VHSND के दिन शामिल होने के लिए प्रेरित करना गावं में जितने भी गर्ववती है उनका ४ जाच कराना, साथ ही गृह भ्रमण के दोरान माँ को खान पान के साथ उचित परामर्श देना ,प्रसव के समय ममता वाहन से गर्ववती को हॉस्पिटल तक पहुचाना, तथा प्रसव होने तक माँ के साथ हॉस्पिटल में रहना , उसके उपरांत माँ के साथ बच्चे के नियमित टीकाकरण कराना ,माँ को आगनबाडी से जोड़कर THR दिलाना साथ ही सरकार के विविन्न योजना के बारे में बताना , माँ और बच्चों के अलावे भी समुदय में बहुत स्वास्स्थ से जुड़े कार्य करना पड़ता है जैसे पुरुष नसबंदी ,महिला बध्याकरण, , टी.बी मरीजो को दवा देना ऐसे कुल ३६ प्रकार की सेवाए समुदाय में दी जाती है ।

साथ ही ANM के साथ माह में बैठक ,क्लस्टर बैठक एवं CHC में अपने कामो का प्रतिवेदन जमा करना इत्यादि कार्य करना पड़ता है । सरोज अपनी कहानी बताते ये भी बोलती है बुरा हम सहियाओ को तब लगता है जब हमरे कामो के प्रोत्साहन राशी भी २ से ३ महीनो के बाद दिया जाता है साथ ही कोई भी राज्य में कोई नेता या स्वास्थ्य से जुडी कार्यकर्म अगर राज्य में होता है तो सभी सहिया को बुला लिया जाता है जिससे बहुत बुरा लगता है ,सरोज बताती है की सुबह जब घर से निकलते है तो शाम कैसे हो जाता है काम में पता ही नहीं चलता ।

अपने बात के क्रम में यह बताती है की समुदाय में लोगो को समझाना बहुत मुस्किल होता था परन्तु जब से पीएलए बैठक गावं गावं में हो रहा है तो बदलाव के साथ अब लोगो को समझाना भी थोडा आसन हो गया है वह बताती है की बैठक में जो कहानी,पिक्चर कार्ड, नाटक ,खेल होता है तो बहुत आसानी से बैठक के विषय को समझ लेते है।

सरोज बताती है की इस बैठक से बदलाव भी देखने को मिल रहा है फिर वो सोनी देवी के बारे में बताती है।

सीमा नायक पति अर्जुन नायक गावं कवाली के उपर टोला की ही रहने वाली है। परिवार में कुल 7 लोग है सीमा की शादी २०१७ में अर्जुन से हुई। परिवार की आर्थिक जीवन अछि नहीं थी सोनी का परिवार पत्तल बनाने का कार्य करता है और उसके परिवार के पुरुष मजदूरी का काम भी करते है , इसी से उनके पुरे परिवार का जीवन चलता है सोनी की जब शादी हुई थी तो उसकी उम्र 18 वर्ष थी इसी दोरान वर्ष २०१७ में वह गर्ववती हो गई सहिया को जब गर्ववती की बात पता चली तो उसने AWW में रजिस्ट्रशन के साथ पहला जाच भी कराया , इस दोरान सोनी पीएलए बैठक में भी सामिल होती थी परन्तु परिवार के सदस्यों की संख्या ज्यादा होने के कारन वह पुरे तरह से भोजन नहीं ले पाती थीi

4 थे महीने में उसे झटका आया तो ये बात सहिया को न बता कर परिवार के लोगो के झाड़ फुक करवाया , लेकिन कुछ दिनों के बाद जब सहिया को सीमा के बारे में पता चला तो वह घर गई और परिवार वालो को समझाकर रिम्स हॉस्पिटल में इलाज करवाया लेकिन दवा नियमित नहीं लेने के कारन सोनी कमजोर होते चली गई।

अंततः सोनी का ४.३.२०१८ को प्रसव पीड़ा सुरु हुई सहिया CHC नामकुम ममता वाहन से लेकर पहुची परन्तु डॉक्टर ने तुरंत सीमा को सदर हॉस्पिटल रेफ़्फ़र कर दिया क्योंकि शिशु का नाभिनाल गले में फसा हुवा था ठीक उसी दिन सदर हॉस्पिटल में सीमा ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसका वजन मात्र २ किलोग्राम १०० ग्राम था। सीमा हॉस्पिटल से आने के कुछ महीनो के बाद फिर से बैठक में आने लगी तभी उसने बैठक में ही सिखा की किस प्रकार कमजोर बच्चो को कंगारू केयर करना है फिर वो अपने बच्चे को खुद १ से २ घंटा छाती के अन्दर रखकर उसे कंगारू केयर करती थी साथी ही अपने परिवार के सदस्यों में अपने पति, अपने ननद था सास को भी सिखाया आज बच्चे का वजन १० किलोग्राम ४०० ग्राम है। इस बीच में सहिया सरोज नियमित गृह भ्रमण करती रही साथ ही माँ और

बच्चे के स्वास्थ्य हेतु बार बार परामर्श के साथ टीकाकरण किया गया सहिया के इस प्रयास और मार्गदर्शन से सीमा कहती है की आज सहिया दीदी का कारन ही मेरा बच्चा जिन्दा है सहिया इस तरह की बातो को सुनकर बहुत ही गौरान्वित महसूस कर रही थी।

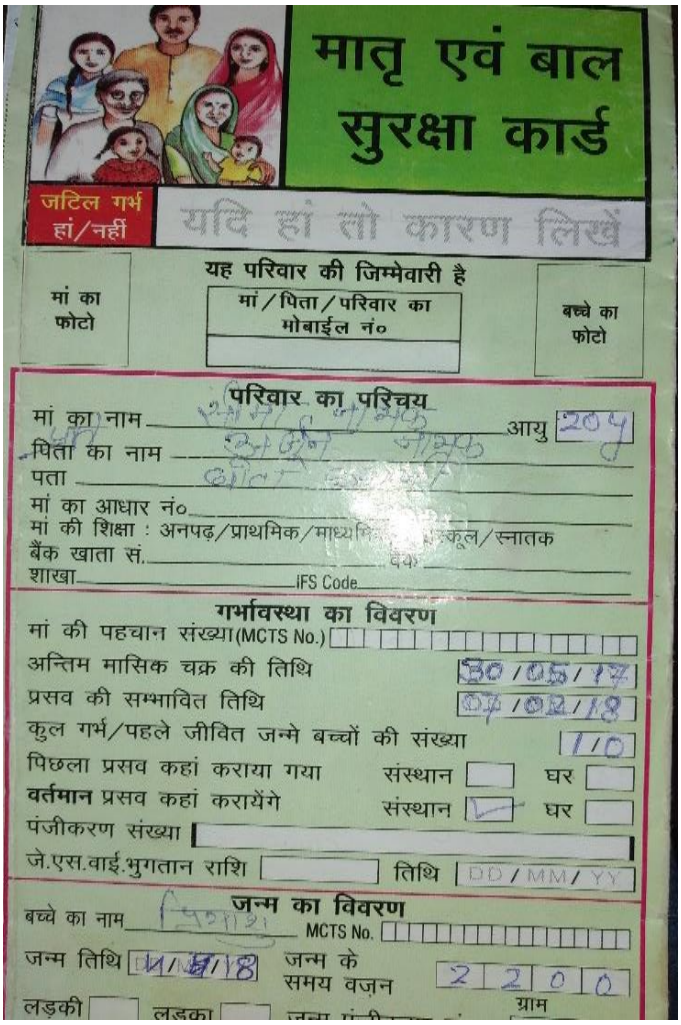

आज सोनी ने अपने बच्चे का नाम भी रख दिया हैउसका नाम अंगद है इस प्रकार दोनों स्वस्थ्य एवं खुश है।

इस दोरान अपनी कहनी बत्ताते हुवे रोने लगती है और कहती है की मेरे जीवन में बहुत उतार चदाव आये पर मैंने सहिया के काम को बहुत ही ईमानदारी पूर्वक किया ,जिसका परिणाम ये हुवा की मुझे वर्ष २०१४ में मुझे सर्वोत्तम सहिया का पुरस्कार से नामित किया गया था।